Class – B.Com I
Subject – BMC
Paper – I (S)
~~Topic – Leadership~~
Lecture – 24
By Dr C P Sahu
Marwari College Darbhanga.

नेतृत्व (Leadership) ①

किसी भी संगठन की सफलता में प्रबन्धकों की नेतृत्वकारी भूमिका का महत्वपूर्ण स्थान है। नेतृत्व वह योग्यता है जिससे नेता अपने अधीनस्थों के व्यवहार एवं निष्पादन को प्रभावित करता है उनसे इच्छित कार्य करवाने में सफल होते हैं। आज के प्रबन्ध के युग में नेतृत्व का एक अलग स्थान है। किसी संस्था की सफलता या असफलता नेतृत्व पर निर्भर करता है। यदि कर्मचारियों को प्रभावी ढंग से मार्ग दर्शन किया जाए तो निश्चित रूप से संस्था को सफलता प्राप्त होगा।

प्रबन्धक किसी भी संस्था का प्रमुख प्रसाधन है अधिकतर व्यवसाय के असफल होने का प्रमुख कारण अकुशल नेतृत्व ही है।

इस तरह नेतृत्व का अर्थ एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं का इस प्रकार निर्देशन करना है कि निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति आसानी से हो सके। प्रभावशाली नेतृत्व एक संस्था की सफलता तथा विकास का मूल आधार है।

नेतृत्व की परिभाषा :-

डोनेल के शब्दों में "किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सम्प्रेषण के द्वारा व्यक्तियों को प्रभावित कर सकने की योग्यता नेतृत्व कहलाती है।"

लिविंगस्टन – "नेतृत्व अन्य व्यक्तियों में किसी सामान्य उद्देश्य को अनुसरण करने की इच्छा को जागृत करने की योग्यता है।"

टेरी के अनुसार – "नेतृत्व व्यक्तियों को पारस्परिक

Scanned with CamScanner

classmate (2)

Date
Page

उद्देश्यों के लिए स्वैच्छिक प्रयत्न करने हेतु प्रभावित करने की योग्यता है।"

उपर्युक्त कह सकते हैं कि नेतृत्व वह शक्ति है जिसके माध्यम से अधीनस्थों एवं कर्मचारियों को वांछित कार्य करने स्वेच्छापूर्ण तथा बिना दबाव के कराये जाते हैं जिससे कर्मचारी स्वतंत्र रूप से कम्पनी या संस्था के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं।

नेतृत्व के विशेषताएँ या लक्षण –

(1) श्रेष्ठ आचरण (2) नेतृत्व एक गतिशील प्रक्रिया (3) यथार्थवादी दृष्टिकोण (4) उत्तरदायित्व (5) अन्य व्यक्तियों द्वारा अनुसरण करना (6) नेता को स्वयं क्रियाशील होना (7) हितों की पारस्परिक एकता (8) दूसरों को प्रभावित करने की योग्यता।

नेतृत्व के कार्य :-

Scanned with CamScanner

नेतृत्व के कार्य :-

③

(1) समन्वय एवं निर्देशन (2) संस्था एवं कर्मचारियों के बीच मध्यस्थता करना (3) कार्यवाही का मार्गदर्शन करना (4) प्रभावी सम्प्रेषण (5) अनुशासन बनाये रखना (6) संस्था का प्रतिनिधित्व करना तथा संस्था के प्रशासन के रूप में कार्य करना

नेतृत्व का महत्व :-

कर्मठ, योग्य एवं अनुभवी नेताओं ने ही विश्व के इतिहास को बनाने का कार्य किया है। यदि इतिहास को याद करें तो नेपोलियन, चर्चिल, वाशिंगटन और महात्मा गाँधी जैसे नेताओं ने अपने कुशल नेतृत्व के द्वारा जनता का मार्गदर्शन किया। आज की स्थिति में धार्मिक हो, सामाजिक, राजनैतिक एवं व्यावसायिक संस्था ही क्यों न हो नेतृत्व का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि नेतृत्व के आधार पर ही निर्धारित उद्देश्यों की

पूर्ति के लिए ~~एक से अधिक~~ कर्मचारियों को सही दिशा निर्देश देकर सफलता पाया जा सकता है। यदि कर्मचारियों की क्रियाओं को सही तरीके से संचालन किया जाए और उसका प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जाए तो निश्चय ही अपने उद्देश्यों को पूरा कर पायेंगे। इसके महत्वों को निम्न बातों से स्पष्ट कर सकते हैं—

(1) व्यवसाय की सफलता के लिए - नेतृत्व व्यावसायिक संस्था के आधारभूत और दुर्लभ संसाधन है। अधिकतर व्यावसायिक संस्थाओं के असफल होने में अकुशल नेतृत्व जितना उत्तरदायी होता है उतना कोई अन्य कारण उत्तरदायी नहीं होता। इसलिए नेतृत्व कुशल एवं योग्य होना चाहिए।

(2) अभिप्रेरणा का स्रोत - नेतृत्व संस्था के सभी लोगों को उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरणा प्रदान करता है।

(3) सामाजिक प्रक्रिया के रूप में परिवर्तन करने के लिए - एक कुशल नेता ही एक कुशल प्रबन्धक हो सकता है। इसी के बदौलत प्रबन्धक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में परिवर्तन हो सकता है।

(4) सामूहिक क्रियाओं का संचालन करने के लिए - लक्ष्यों की (5) पूर्ति की जाने वाली विभिन्न क्रियाओं को एकसूत्र में बाँध कर कार्य को सम्पन्न किया जाता है। इसलिए सामूहिक क्रियाओं के कुशल संचालन के लिए नेतृत्व अत्यन्त ही आवश्यक है।

(5) सहयोग प्राप्ति के लिए - एक कुशल नेतृत्व ही विभिन्न साधनों के द्वारा अपने सहयोगियों का सहयोग प्राप्त करता है। एक नेता अपनी मैत्रीपूर्ण व्यवहार, कार्य की मान्यता शिकायतों के शीघ्र समाधान का सहयोग प्रदान करता है।

इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि व्यवसाय की सफलता के लिए एक कुशल नेतृत्व हो जिससे संस्था के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम हो।

— x —

Scanned with CamScanner